किन्नौर-हि.प्र.। आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए माननीय मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह। साथ हैं ब्र.कु. सरस्वती तथा अन्य।

बूंदी-राज.। अर्न्तराष्ट्रीय वृद्ध जन दिवस पर सुदामा सेवा संस्थान वृद्धाश्रम में 'परिवार व समाज में बुज़ुर्गों की भूमिका' विषयक संवाद कार्यक्रम में उपस्थित हैं पूर्व वित्त राज्यमंत्री हरिमोहन शर्मा, शहर काजी एवं कौमी एकता के अध्यक्ष अब्दुल शक्कुर कादरी, बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष अनिल शर्मा, गुरूद्वारा ग्रन्थी कर्पाल सिंह, दैनिक अंगद के प्रधान सम्पादक मदन मदिर, ब्र.कु. भारती तथा अन्य।

नारनौल-हरियाणा। यातायात एवं परिवहन प्रभाग की सेवाओं के बारे में चर्चा करने के उपरान्त समूह चित्र में स्टेशन मास्टर मुनेश भार्गव, स्टेशन अधीक्षक महेन्द्र कुमार, रिज़र्वेशन निरीक्षक आर.पी.यादव, प्रभाग संयोजक ब्र.कु. सुरेश शर्मा, ब्र.कु. सुनीता एवं ब्र.कु. मधु।

आस्का-ओडिशा। चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन पश्चात् मंचासीन हैं काउन्सलर रवि पोल्लई, ब्र.कु. प्रवाती तथा अन्य।

हज़ारीबाग-झारखण्ड। चैतन्य दुर्गा झाँकी कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित प्राचार्य डॉ बालेश्वर राम, आई.एम.पी.एस के निदेशक प्रदीप कुमार, एस.एस.डब्ल्यू के निदेशक अरविंद कुमार व ब्र.कु. राजमति।

पठानकोट-पंजाब। ज्ञानचर्चा के पश्चात् एस.एस.पी. विवेक सोनी को ईश्वरीय वरदान कार्ड देते हुए ब्र.कु. सत्या, ब्र.कु. प्रताप तथा अन्य।

नवरात्रि में जलाया नवीनता का दीपक...?

- ब्र.कु. श्याम,माउण्ट आबू

अंक शास्त्र में 'नव' अंक के साथ जुड़ी हुई अनेक बाते हैं। नवरस, नवरंग, नवरतन, नवग्रह, ग्रहों की नौ अवस्थायें, नौधा भक्ति, नवनिधि, नवद्वार, नवगुण, नवदीप, योग के नौ चक्र आदि आदि।

इन सब में नारी शक्ति का, मातृ शक्ति का जय-जयकार करता उत्सव नवरात्रि के साथ नौदुर्गा का नाम जुड़ा हुआ है। शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायिनी, महागौरी, सिद्धिदात्री और कालरात्रि।

गुजरात के नवरात्रि का गरबा और रास अब सिर्फ राष्ट्र तक ही सीमित नहीं है, बल्कि विदेशों में भी धूम मचाता है। इसके निमित्त अनेक कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते हैं। नवरात्रि में नौ कन्याओं का पूजन करने की भी प्रथा है। भाषाविद डॉक्टर योगेन्द्र व्यास ऐसा मानते हैं कि 'अम्बा' शब्द संस्कृत के, 'अब' का अर्थ है पानी, जल। उसे स्त्रीलिंग बनाने के लिए 'आ' प्रत्यय जोड़ा गया। जो पानीदार है, आर्द्र है, भावनाओं और संवेदनाओं से भीगा हुआ है, वो 'अम्बा' यानि कि माता है। 'अम्बा' शब्द से 'अम्मा' होना समझ सकते हैं।

हरेक क्षेत्र में शक्ति का महत्व, मनुष्य के भीतर छिपी विविध शक्तियों को, 'देवी' का रूप दिया गया है। ये फिर बुद्धि या श्रद्धा, उसमें दैवी तत्व का दर्शन करने में आया है।

नारी सौंदर्य और कर्त्तव्य, दोनों का संगम है। उसमें शिवत्व और शौर्य दोनों ही है। महात्मा गांधी एक आधारभूत प्रश्न पूछते हैं: 'पुरुष किसलिए अपने घर की स्त्रियों को 'गुड़िया' बनाने की इच्छा रखते हैं? राजपूत जब लड़ने में ढ़ीले पड़ जाते हैं, तब माता या पत्नी ही उसे लड़ते लड़ते युद्ध में खप जाने की प्रेरणा देती है।'

एक प्रसंग के अनुसार, एक राजपूत युवक नई शादी करके आता है और दुश्मन के हमले के ढ़ोल की आवाज़ सुनाई देती है। राजपूत युवक दुविधा में पड़ जाता है कि मुझे क्या करना चाहिए? लेकिन नव परणीता राजपूतानी उस भावावेश में आये बिना उसके हाथ में तलवार थमा कर कहती है - 'कंथा रण में पैठके, कोनी जोवे वाट? साथी तारा त्रण छे, हैयु कटारी ने हाथ।'

अगर पति कायरता दिखाकर युद्ध के मैदान से भाग कर आये तो, माता या पत्नी उसे घर में आने ही नहीं देते थे, घर में पैठने ही नहीं देते थे। सुदर्शन का एक नाटक है, जिसमें एक स्त्री का पति युद्ध क्षेत्र से भागकर घर आ जाता है, लेकिन पत्नी घर का द्वारा ही नहीं खोलती। लेकिन उस युवक की माता बहुत ही समझदार सानी है। वो बहू को कहती है : 'मैं तुझे कहती हूँ कि दरवाज़ा खोल। मेरा पुत्र खडग की आवाज़ सुन घबराया हुआ घर आया है। उसे शांति तो चाहिये ना?'

सासू के ऐसे वाक्य से बहू संतुष्ट नहीं हुई। वो विचार कर रही थी कि राजपूतानी होकर सासू माँ आज उल्टा कैसे सोच रही हैं?

इतने में सासू माँ का आदेश: 'बहू, शुद्ध घी का गरम गरम शीरा बनाओ।'

राजपूतानी को कुछ भी समझ में नहीं आता कि आज सासू माँ को हो क्या गया है?

लेकिन सासू माँ के आदेश का पालन करना ही पड़े। उसने तवा और तवेता तैयार कर शीरा बनाना चालू कर दिया। आटा भूनते हुए तवे के साथ तवेते के टकराने के आवाज़ यानि की लोखंड की

आवाज़ आ रही थी।

सासू माँ ने पूछा : 'बहू, ये किसकी आवाज़ आ रही है?'

'बा, लोखंड के तवे के साथ तवेते के टकराने की आवाज़ है' - बहू ने कहा।

सासू अवसर देख कहती है: 'लोखंड टकराने की आवाज़ बंद कर। मेरा पुत्र लोखंड की तलवार के टकराने की आवाज़ सुनकर ही घर में आया है। अब तवे और तवेते की आवाज़ सुनकर घर छोड़कर भागेगा तो हम उसे कहाँ ढूंढ़ने जायेंगे?'

माता के शब्दों में रहा हुआ व्यंग्य और टोना राजपूत युवक परख गया और कहा कि : 'माँ, मैं इतना तो कायर नहीं हूँ कि लोखंड के तवे और तवेते की आवाज़ सुनकर भी डर जाऊँ?' राजपूत खड़ा हुआ और रणभूमि में लड़ते लड़ते वीर गति को प्राप्त हुआ।

उत्सव और पर्व जीवन में पवित्र बनाने का संदेश देते हैं और महापुरुष, देवी-देवताओं की तरह त्याग बलिदान के लिए भी संदेश देते हैं।

आज की नारी को सिर्फ और सिर्फ देह के सौंदर्य बनाये रखने के लिए ही अपनी दृष्टि सीमित रखने के बदले अपने शौर्य को प्रगटाने की ज़रूरत है। धर्म स्त्री पर टिका हुआ है, सभ्य स्त्री पर निर्भर है, और फैशन का मूल भी वही है। बात क्यों आगे बढ़ाते हो- कहो ना, एक शब्द में कहें तो दुनिया स्त्री पर टिकी हुई है।

माता के नाम का गरबा गाते हैं तो मन भी 'देवीमय' बनना चाहिए। आजकल गरबा कोलाहल और आवाज़ के प्रदूषण के निमित्त बन गया है। प्रदर्शन प्रियता के वश हुए स्त्री या पुरुष महंगे वस्त्र पहनकर गरबे घूमने के बदले नाच की ओर ढ़लते हुए दिखाई देते हैं।

नवरात्रि 'रात्रि' रहने के बदले नवजागृति संदेश बननी चाहिए। दांडिया से खेलने वाले पुरुष ज़रूर समझें कि वे अपनी शौर्य आवाज़ से दुश्मनों के दांत खट्टे करने का सामर्थ्य रखते हैं। इस बात की समाज और देश को प्रतीति करानी चाहिए। देवी माता आपको देख रही हैं, ऐसा भाव मन में रख सहज और पवित्र दृष्टि से गरबा या नवरात्रि का आनंद लेना चाहिए।

नवरात्रि के त्योहार में हमें पाँच बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए, जिससे ही हमारे भीतर सन्निहित देवत्व को व्यवहार में ला सकेंगे।

1. नवरात्रि सिर्फ नाच गान का उत्सव ही नहीं, बल्कि पवित्रता की दृष्टि से इसे पवित्र उत्सव बनायें।

2. बाह्य दिखावा या प्रदर्शन वृत्ति के वश होकर महंगे वस्त्रों से सजकर दिखाने की कामना हानिकारक है। उससे बचना चाहिए।

3. आपकी वाणी, व्यवहार और आचरण सबमें देवी और दैवी तत्व का पहरा रखें।

4. नवरात्रि उत्सव सादगी भरे रूप को देखने की तड़प है। इसलिए उसे भभके भरे आकर्षण से अछूत न बनायें।

5. गरबा के निमित्त नृत्य के बदले 'सस्ता नाच' के मोह से आप स्वयं को बचायें।

उपरोक्त पाँच बातों को गहराई से समझें और झाँके अपने अंदर... कि कहीं मैं देवत्व के बदले दानव की प्रवृत्ति का रूप तो नहीं बन रहा हूँ? और हम कामना करते हैं कि देवी हमसे प्रसन्न हों, लेकिन प्रसन्न करने के तरीके में कहीं दानव की प्रवृत्ति मिक्स तो नहीं हो जाती। अगर हम इस तरह से अपनी सोच को अंतर्मुखी बनकर झाँककर अपने आप पर पहरा रखेंगे तो अवश्य ही देवत्व वा देवी को प्रसन्न कर पायेंगे, और तभी हम विजयादशमी मनाने के हकदार होंगे और हाँ, तो फिर हम दीपावले में आत्मा रूपी दीप में जो स्वप्न संजोये हैं उसे साकार रूप दे सकेंगे। क्योंकि हमने अपने भीतर छिपे या बाह्य से आये हुए दानव प्रवृत्ति को विवेक रूपी पहरे की मदद से बचा लिया। ऐसा होने पर हमारे आने वाले नये साल में देवत्व के दीप की लौ सदा ही जलती रहेगी और हमारी ज़िन्दगी सुकूनभरी हो जायेगी।